स्थापन सेवा की औपचारिक प्रक्रिया (Formal Procedure)–स्थापन सेवा के लिए कुछ प्रपत्र तैयार किए जाते हैं। रोजगार कार्यालयों में इसी प्रकार के प्रपत्र अभ्यर्थियों से भराये जाते हैं।

संचयी आलेख (Cumulative Records)–का भी उपयोग किया जाता है रोजगार दिलाने, स्थानीयता जिस पर पत्र व्यवहार किया जाये रोजगार सम्बन्धी प्रश्न भी होते हैं।

प्रथम खण्ड–अभ्यर्थी का नाम, विद्यालय का नाम, कक्षा जो पास की या शैक्षिक योग्यतायें, स्थानीयता जिस पर पत्र व्यवहार किया जाए रोजगार सम्बन्धी प्रश्न भी होते है।

द्वितीय खण्ड–संचयी आलेख के रूप में सूचनाएँ एकत्रित की जाती हैं। किन-किन विद्यालयों में किन-किन कक्षाओं में पढ़ा तथा क्यों संस्थायें बदली इसका कारण भी देना होता है। इसी प्रकार उच्च शिक्षा में महाविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने का विवरण प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियों के साथ लिया जाता है। तकनीकी प्रशिक्षण में तकनीकी महाविद्यालयों का भी विवरण यदि हो तो लिया जाता है।

तृतीय खण्ड–छात्र से रोजगार सम्बन्धी सूचनाओं के लिए वरीयता भी ली जाती है। विभिन्न रोजगारों की सूची दी जाती हैं उनमें प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय वरीयता कराई जाती है इनके अतिरिक्त भी वरीयता दे सकता है–औद्योगिक, तकनीकी, लिपिक, शिक्षण तथा अन्य व्यवसाय आदि के साथ विशिष्ट पदों के लिए छात्र से विशिष्टकीय भी भरवाया जाता है। जैसे लिपिक, टाइपिस्ट, स्टेनोग्राफर को भी भरवाया जाता है।

छात्र सम्बन्धी योग्यताओं एवं क्षमताओं सम्बन्धी सूचनाओं का संग्रह किया जाता है। इसे गोपनीय रखा जाता है नियुक्तिकर्त्ता को गोपनीय रूप में दिखलाया जाता है।

चतुर्थ खण्ड–संस्थाओं की माँग के अनुसार नियुक्तिकर्त्ता को एक प्रपत्र पर अभ्यर्थी सम्बन्धी गोपनीय ढंग से सूचना भेजी जाती है अभ्यर्थी का नाम, पिता/पति का नाम, स्थायी पता, जन्मतिथि, शैक्षिक योग्यता, जाति, धर्म, विशेष योग्यता तथा प्रशिक्षण आदि के साथ व्यक्तिगत गुण, चरित्र, परिश्रम, आज्ञाकारिता, ईमानदारी सहयोग की भावना छात्र की रूचियों, विद्यालय के कार्यक्रमों में भागीदारी स्वास्थ्य तथा परामर्शदाता व शिक्षकों की आख्यायें आदि भेजता है।

पंचम खण्ड–जब संस्था में अभ्यर्थियों को चयन के लिए बुलावा भेजते हैं तब नियुक्तिकर्त्ता रोजगार व व्यवसाय के सम्बन्ध में जानकारी देने के लिए निम्नांकित सूचनायें सम्पर्क प्रपत्र पर पूरा करके भेजता है। संस्था तथा नियुक्ति कर्त्ता का नाम तथा पता, स्थायी या अस्थायी पद रिक्त, कार्यकाल की अवधि, प्रारम्भिक वेतनमान तथा अन्य सुविधाएँ निवास व वाहन आदि, शैक्षिक योग्यता, प्रशिक्षण, भविष्य में प्रगति के अवसर, रोजगार की प्रकृति, व्यवसाय में स्थापन की प्रक्रिया तथा अन्य विवरण व सुविधाएँ आदि।

स्थापन सेवा को प्रभावशाली बनाने हेतु सुझाव (Suggestions for Effective of Placement Service)

स्थापन सेवाओं को प्रभावशाली बनाने के लिए अधोलिखित सुझाव का अनुसरण करना चाहिए।

(1) विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय के विभागों को अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले छात्रों की सूची उनके पतों के साथ रखना चाहिए।

(2) संचयी आलेख पत्र पूर्ण होना चाहिए तथा उसे वस्तुनिष्ठ रूप से तैयार किया जाये।

(3) रोजगार कार्यालयों में छात्रों के सम्बन्ध में पूर्ण आलेख श्रेणी वार रखना चाहिए।

(4) रोजगार कार्यालयों में रिक्त पदों के सभी विवरण विभिन्न स्त्रोतों तथा माध्यमों में रखना चाहिए।

(5) प्रत्येक संस्था को अपने रिक्त स्थान तथा पदों को विवरण रखना चाहिए। आवश्यक सूचनायें उपलब्ध रहनी चाहिए।

(1) **केन्द्रीय स्तर** (Centralized Stage)–स्थापन सेवा संगठन को एक पृथक विभाग प्रत्येक विद्यालय में होता है। इसके मुख्य छात्रों के लिए विभिन्न संस्थाओं के रिक्त स्थानों की जानकारी रखना, छात्रों की योग्यताओं एवं क्षमताओं की सूचना रखना इसके लिए संचयी आलेख का भी उपयोग करते हैं। स्थापन सेवा के लिए परामर्शदाता की भी सहायता ली जाती है। इनके आधार पर छात्रों को उपयुक्त स्थल दिलाया जाता है। स्थापन सेवाओं का छात्रों की जानकारी के लिए प्रचार करना होता है। इसके लिए प्रशिक्षित प्रमुख रखा जाता है, वह अपना समय इसी में लगाता है।

(2) **विकेन्द्रीय स्तर** (Decentralized Stage)–स्थापन सेवा उत्तरदायित्व केवल व्यक्ति का नहीं होता जैसा केन्द्रीय स्तर का उल्लेख किया है। छात्र को स्थान दिलाने में विद्यालय, निर्देशन, परामर्शदाता, स्थापन सेवा, प्रशिक्षण विभाग, औद्योगिक शिक्षा विभाग अपने छात्रों को रोजगार दिलाने में सहायता करते हैं। विभागाध्यक्ष छात्रों के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी रखते हैं। इसलिए अपने छात्रों को उपयुक्त रोजगार में स्थान दिलाते हैं।

(3) **मिश्रित स्तर** (Mixed Stage)–कुछ संस्थाओं में दोनों प्रकार की स्थापन सेवाओं का उपयोग किया जाता है स्थापन सेवा का प्रमुख भी होता है तथा विभागाध्यक्ष भी अपने छात्रों को उपयुक्त रोजगार में स्थान दिलाने में सहायता करते हैं।

स्थापन सेवा की सुविधाएँ एवं प्रक्रिया (Facilities and Procedure of Placement Service)

भारत सरकार के स्थापन के लिए केन्द्रीय तथा राज्य स्तर पर रोजगार कार्यालय खोले हैं जिनका कार्य छात्रों का पंजीकरण करना जिसमें उनकी शैक्षिक तथा तकनीकी योग्यता का विवरण तथा प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियों को लिया जाता है। छात्र की विशिष्ट योग्यताओं का विवरण भी रखा जाता है। विभिन्न संस्थाएँ तथा कार्यालय अपनी आवश्यकता हेतु कर्मचारियों की मांग इन रोजगार कार्यालय को भेजते हैं। उनकी माँग के अनुसार पंजीकृत छात्रों में से उपयुक्त अभ्यार्थियों को विवरण भेजते हैं। उन्हें साक्षात्कार हेतु बुलाकर चयन किया जाता है। प्रदेश में जिला स्तर पर कार्यालय होता है जिसका कार्य रोजगार दिलाना होता है।

स्नातक तथा परास्नातक छात्रों के लिए विश्वविद्यालय के साथ इस प्रकार का रोजगार कार्यालय होता है यहाँ भी स्नातक तथा परास्नातक छात्रों का पंजीकरण किया जाता है। पंजीकरण के साथ छात्र सम्बन्ध, शैक्षिक, तकनीकी तथा विशिष्टीकरण योग्यताओं के प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियाँ भी रखी जाती है। इसके अतिरिक्त रोजगार समाचार पत्र जिनमें रिक्त स्थानों का विज्ञापन दिया जाता है, छात्रों के लिए उपलब्ध कराया जाता है। रोजगार कार्यालय में रिक्त स्थानों का विवरण रखा जाता है। छात्र सीधे आवेदन करते हैं संस्थाओं की माँग के अनुसार अभ्यर्थियों की सूची उनके सम्पूर्ण विवरण के साथ भेजते हैं। संस्थाएँ अपनी आवश्यकतानुसार साक्षात्कार के लिए बुलाते हैं। योग्य तथा उपयुक्त अभ्यर्थियों का चयन कर लेते हैं।

रोजगार कार्यालय की विशेषताएँ–इन रोजगार कार्यालयों का मुख्य उद्देश्य स्थापन सेवा करना है और संस्थाओं को उनकी आवश्यकतानुसार उपयुक्त अभ्यर्थियों को देना है। इस प्रकार इस कार्य की माँग की पूर्ति करना है। इन कार्यालयों के माध्यम से रोजगार मिलता है तथा यह रोजगार के लिए छात्रों का उत्तम साधन है परन्तु इन कार्यालयों में दोष आ गये हैं।

अनौपचारिक रोजगार की प्रक्रिया (Informal Procedure)–उत्तम प्रकार की प्रशिक्षण संस्थाओं तथा औद्योगिक संस्थाओं के अध्यक्षों से सीधा सम्पर्क भी संस्थायें अपने माँग के अनुसार करती हैं योग्य छात्रों को चुनना पड़ता है किस संस्था में रोजगार के लिए नियुक्त ली जाए। निजी संस्थायें योग्य व्यक्तियों को अच्छे वेतनमान तथा सुविधाएँ देकर आर्कषित करते है। इसलिए निजी क्षेत्र में विकास तथा उत्पादन बढ़ रहा है और राजकीय क्षेत्र की प्रक्रिया लम्बी हैं तथा पहुँच वाले व्यक्तियों का चयन हो पाता है अभिभावक तथा माता-पिता जिन रोजगार में लगे हैं अपने बच्चों को स्थान दिलाने में सफल हो पाते हैं।

अभिरूचि, इच्छाओं तथा क्षमताओं के अनुरूप प्रशिक्षण संस्थाएँ कहाँ स्थित हैं तथा उनमें प्रवेश की प्रक्रिया क्या है? इनके लिए जो निर्देशन दिया जाता है वह स्थापन सेवा के अन्तर्गत ही आते हैं।

नोट्स स्थापन सेवा का अर्थ रोजगार दिलाने तक ही सीमित नहीं है, अपितु छात्रों को विभिन्न विषयों का चयन करने में सहायता देना है जिससे वह भावी जीवन की तैयारी कर सके।

(2) व्यावसायिक स्थापन सेवा (Vocational Placement Service)

छात्र को उसकी योग्यताओं, अभिरुचियों तथा क्षमताओं के अनुरूप उपयुक्त व्यवसाय या रोजगार में उचित स्थान दिलाने में सहायता देने की क्रियाओं को व्यवसायिक स्थापन सेवा कहते हैं।

मायर्स ने अपनी पुस्तक में यह उत्तरदायित्व विद्यालय का ही बतलाया है कि छात्र को शिक्षा देने के उपरान्त उसे उपयुक्त रोजगार में स्थान दिलाने का कार्य विद्यालय को ही करना चाहिए। इसके प्रमुख रूप अधोलिखित हैं–

(अ) स्थापन सेवा सभी के सहयोग से की जानी चाहिए, जिसमें अध्यापक, निर्देशक, परामर्शदाता, प्राचार्य तथा अन्य संस्थाएँ। इसके अतिरिक्त विभिन्न व्यवसायों के कर्मचारी भी सहयोग कर सके हैं। रोजगार में स्थापन के निम्नांकित स्वरूप होते हैं।

(1) व्यावसायिक कार्यों का अभिविन्यास, प्रशिक्षण तथा कार्यशाला का आयोजन करना,

(2) विभिन्न व्यवसायों तथा अवसरों से छात्र को जानकारी देना,

(3) छात्रों की योग्यताओं एवं क्षमताओं से रोजगार के लिए आवश्यक क्रियाओं तथा कौशलों से मिलान करना।

(4) छात्र को पूर्ण जानकारी देने के बाद, व्यवसाय का चुनाव वह स्वयं करना चाहिए।

(5) स्थापन के पश्चात् आकलन के लिए अनुगामी क्रियाओं का उपयोग करना चाहिए। रोजगार से सन्तुष्टि का भी पता लगाना चाहिए।

(ब) समाज की माँग एवं पूर्ति से स्थापन करना। स्थानीय समाज की आवश्यकता के अनुसार विद्यालय द्वारा स्थापन सेवाओं का नियोजन करना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी इस तथ्य को महत्व दिया गया है कि व्यावसायिक शिक्षा में स्थानीय आवश्यकतानुसार ही विद्यालयों द्वारा व्यवस्था करनी चाहिए इस सम्बन्ध में सूचनाओं को एकत्रित किया जाता है तथा स्थानीय माँग को भी ध्यान में रखते हैं। प्रशिक्षण में इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखा जाता है।

(स) स्थापन सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए छात्रों, अध्यापकों, प्रबन्धकों प्राचार्यो को भागीदारी बनाना चाहिए जिससे इसकी उपयोगिता एवं प्रक्रिया को समझ सके। इसके अतिरिक्त संस्थाओं, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, अभिभावकों तथा परामर्श सेवा का भी उपयोग करना चाहिए। रोजगार सम्बन्धी सूचनाएँ विश्वसनीय होनी चाहिए। योग्य अध्यापकों द्वारा ही स्थापन सेवा का कार्य कराया जाए।

स्थापन सेवाओं की व्यवस्था (Organization of Placement Service)

निर्देशन तथा परामर्श सेवाओं का संगठन भारत में दो स्तरों पर किया जाता है–केन्द्रीय/राष्ट्रीय स्तर पर तथा प्रदेश स्तर। स्थानापन सेवाएँ भी निर्देशन तथा परामर्श कार्यक्रमों का ही एक अंग है इसकी व्यवस्था तीन प्रकार से की जाती है– (1) केन्द्रीय स्तर (2) विकेन्द्रीयकरण तथा (3) मिश्रित स्तर।

भारत में रोजगार तथा व्यवसाय का नियोजन तथा नियन्त्रण दो स्तरों पर किया जाता है। कुछ संस्थाएँ तथा रोजगार का संचालन केन्द्र द्वारा किया जाता है। अधिकांश रोजगार तथा संस्थाओं का संचालन राज्य द्वारा किया जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ रोजगार निजी स्तर पर संचालित किए जाते हैं।

जॉन डीवी ने शिक्षा का यही उद्देश्य बताया कि छात्र में सामाजिक तथा व्यावसायिक क्षमताओं का विकास करना जिससे वह समाज में अपना स्थान बना सके इसे उन्होंने सामाजिक प्रभावशीलता का विकास माना है।

(1) शैक्षिक स्थापन (Educational Placement)

डाक्टर बनने के लिए इण्टर में भौतिक, रसायन, जीव विज्ञान तथा वनस्पति विज्ञान जैसे विषयों का अध्ययन आवश्यक होता है। शिक्षक बनने के लिए अध्यापक प्रशिक्षण प्राप्त करना आवश्यक होता है।

(अ) अध्ययन हेतु पाठ्यक्रमों में स्थापन,

(ब) पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में स्थापन तथा

(स) भावी शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम में स्थापन।

(अ) अध्ययन हेतु पाठ्यक्रमों में स्थापन–'मुदालियर आयोग' (1953) के सुझाव के परिणामस्वरूप माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विविध पाठ्यक्रम प्रारम्भ किए गए हैं। अत: आठवीं कक्षा उत्तीर्ण कर लेने के बाद प्रत्येक बालक या बालकों का एक-सा ही प्रश्न होता हैं, "मैं कौन-से विषयों का अध्ययन करूँ?" ऐसे छात्रों को अध्यापक या परामर्शदाता की सहायता की आवश्यकता पड़ती है। इनमें कोई भी सहायता कर सकता है, परन्तु सहायता करने वाले को निम्नलिखित तथ्यों से परिचित होना पड़ सकता है।

(1) विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले पाठ्य विषयों की सूची तथा आवश्यकताएँ।

(2) छात्रों द्वारा विचार किए गए कार्य क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण।

(3) उच्च अध्ययन के लिए छात्र को प्रवेश की किन आवश्यकताओं की पूर्ति करनी होगी?

छात्र को किसी पाठ्यक्रम में प्रवेश देते समय निम्नांकित बातों को ध्यान में रखना चाहिए–

(1) प्रवेश प्रक्रिया सरल तथा वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए।

(2) छात्र प्रवेश के लिए सक्षम तथा तैयार होना चाहिए।

(3) अध्यापक को किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पूर्व परामर्शदाता की भी सहायता लेनी चाहिए।

(4) एक योग्य अध्यापक द्वारा प्रत्येक छात्र के चयन की परख की जानी चाहिए-छात्रों द्वारा विद्यालय के नियमों को गलत समझना तथा गलत चयन के दुष्परिणामों से उनको अवगत करना ही जाँच का उद्देश्य है। इस कार्य के लिए अध्यापक को छात्र सम्बन्धी सूचनाओं का ज्ञान होना चाहिए।

छात्र सम्बन्धी सूचनाओं का स्रोत विश्वसनीय हो तथा सूचनाएँ वैध होनी चाहिए।

(ब) पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में स्थापन–नियमित पाठ्यक्रमों से छात्रों का मानसिक विकास होता है जबकि शिक्षा द्वारा सर्वांगीण विकास की अपेक्षा की जाती है। इसलिए सामाजिक तथा शारीरिक विकास के लिए पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में भी स्थापन करना आवश्यक होता है। विद्यालय में खेल-कूद तथा क्रियाओं की भी व्यवस्था की जाती है।

पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं की परिस्थिति नियमित कक्षागत क्रियाओं से भिन्न होती है। इन परिस्थितियों में छात्र अधिक सीखता है। इन क्रियाओं के चयन हेतु भी छात्रों को निर्देशन की आवश्यकता होती है। छात्र को उसकी रूचियों तथा क्षमताओं के अनुरूप ही इनका चयन करना उपयुक्त होता है। जैसे कुछ छात्रों को सामाजिक कार्यों में अधिक रूचि होती है तथा नेतृत्व के गुण होते हैं तथा अन्य क्षेत्रों में खेलकूद में अधिक रूचि होती है। दक्षता के लिए निर्देशन आवश्यक होता है।

(स) भावी शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम में स्थापन–आठवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद विषयों के चयन के लिए निर्देशन की आवश्यता होती है और इण्टर परीक्षा पास करने के बाद अनेक प्रशिक्षण विद्यालयों में प्रवेश के अवसर होते हैं। परन्तु छात्रों को इनका ज्ञान नहीं होता है तथा जानकारी होने पर निश्चित नहीं कर पाते कि किस प्रशिक्षण में प्रवेश लिया जाए जिसमें जीवन में स्थान पाकर सफल हो सकें। यह उत्तरदायित्व भी स्थापन सेवा का है। उनकी

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. व्यावसायिक निर्देशन सेवाएँ ..... अधिक होती है।
2. व्यावसायिक सेवा का उद्देश्य ..... दिलाना है।
3. अनुगामी सेवाओं की प्रक्रिया को निर्देशन की प्रभावशीलता का ..... किया जाता है।
4. अनुगामी सेवा का सम्बन्ध व्यक्ति के ..... से होता है।
5. व्यावसायिक निर्देशन की मुख्य ..... सेवाएँ हैं।

5.2 अनुगामी सेवा (Follow-up Service)

निर्देशन तथा परामर्श निरन्तर चलने वाली सेवाएँ तथा प्रक्रियाएँ हैं। छात्र को रोजगार दिलाना, अध्ययन के लिए विषयों का चुनाव कराने, किसी प्रशिक्षण में प्रवेश दिलाने तक ही सीमित नहीं है, अपितु छात्र को रोजगार से कितनी सन्तुष्टि, मिल रही है, अथवा समायोजन हो पा रहा है तथा कार्य कुशलता कितनी है इन बातों का भी पता लगाना अनुगामी सेवा का कार्य होता है। स्थापन सेवाओं की प्रभावशीलता का आकलन अनुगामी सेवाओं द्वारा किया जाता है। निर्देशन कार्यक्रम का अन्तिम तथा महत्वपूर्ण सोपान अनुगामी है।

अनुगामी सेवा का अर्थ (Meaning of follow-up Service)

निर्देशन तथा शिक्षण का सन्दर्भ बिन्दु भावी योग्यताओं एवं कार्य कुशलता का विकास करना है। छात्र किन विषयों का अध्ययन करे जिससे भविष्य में उनमें दक्षता प्राप्त कर सकेगा। छात्र किस रोजगार में पाये जिससे उसका समायोजन, सन्तुष्टि तथा कार्य कुशलता से कर सकेगा। इस प्रकार अनुगामी सेवा द्वारा निर्देशन कार्यक्रम की सार्थकता तथा वैधता ज्ञात की जाती है।

जिस प्रकार एक डाक्टर एक रोगी का निदान करके, जो औषधि देता है दो या तीन दिन बाद उस दवाई को रोगी पर प्रभाव के विषय में पूछाता है। डाक्टर का कार्य रोगी का निदान करना तथा औषधि देने तक ही सीमित नहीं होता है, अपितु उसकी दवा से रोगी पर क्या प्रभाव हुआ? इस प्रकार्य को अनुभवी सेवा कहते हैं।

अनुगामी सेवा की परिभाषा (Definition of Follow-up Service)

अनुगामी सेवाओं की व्यापक परिभाषा निम्नांकित है–

"The follow up service is the evaluative and remedial step to observe the work ability of the guidance and counseling provide to an individual, on the placement in the job or an academic task, in terms of his satisfaction and performance in the job."

"अनुगामी सेवा, निर्देशन तथा परामर्श का मूल्यांकन तथा सुधारात्मक सोपान है जिसमें स्थापन की अवस्था में छात्र की कार्यकुशलता देखी जाती है कि वह रोजगार से सन्तुष्ट तथा प्रभावशाली ढंग से कार्य कर रहा है।"

प्रथम अवस्था	द्वितीय अवस्था	तृतीय अवस्था
निर्देशन तथा परामर्श सेवाएँ →	स्थापन सेवा →	अनुगामी सेवा
↓		↓
(1) अध्ययन विषयों का चयन →	(1) विषयों का अध्ययन करना →	(1) अध्ययन विषयों या रोजगार से सन्तुष्टि